आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 9 अंक : 48 रोहतक, 21 मई, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

जीवन का लक्ष्य

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

हर मनुष्य का लक्ष्य जीवन में सुख भोग भोगना है। सुख के विषय में लोगों की अपनी अलग-अलग सोच है। कोई धन को ही सुख का साधन समझता है, कोई भोग-विलास को ही सुख समझता है, तो कोई संसार को दु:खसागर मानकर उससे छुटकारा पाने का उपाय ढूढ़ता है और इसकी इच्छा पूर्ति में घर-बार, माता-पिता, बन्धु, रिश्तेदारों, मित्रों आदि को छोड़ देता है। कुछ विवाहित जीवन को अर्थात् गृहस्थ जीवन को सुख का सबसे बड़ा साधन मानते हैं। हर मनुष्य का सोचने-विचारने, काम करने का अलग-अलग तरीका है, परन्तु वेद-शास्त्रों के अनुसार मनुष्य के जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, मोक्ष प्राप्ति ही वास्तव में सुख का साधन है। मोक्ष की प्राप्ति कब होती है जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाये। यजु० में आया '**यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्यु०**' (यजु० 25/13)।

उस परमात्मा का आश्रय लेना, भक्ति करना ही अमृत (मोक्ष) की प्राप्ति है और उसकी भक्ति न करना ही मृत्यु (दु:ख) का कारण है। महर्षि दयानन्द ने लिखा कि उपासना से उपासक का इतना बल बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर लेगा। (सत्यार्थप्रकाश, समु० 7)। मनुष्य मोक्ष-प्राप्ति को लक्ष्य न मानकर अज्ञानतावश काम, क्रोध, मोह आदि को अपना लक्ष्य बना लेता है और उसे कुछ भी इनके अतिरिक्त दिखाई ही नहीं देता। किसी ने ठीक ही कहा—

दिवा पश्यति नोलूकः काको नक्तं न पश्यति। अपूर्वः कोऽपि कामान्धो दिवा नक्तं न पश्यति॥

उल्लू को दिन में नहीं दीखता और कौए को रात्रि में नहीं दिखाई देता परन्तु कामान्ध ऐसा विचित्र जन्तु है जिसे न दिन में दिखाई देता है और न रात्रि में। प्रेम जिसका ईंधन है, सम्भोग जिसकी ज्वालाएँ हैं, ऐसी यह कामरूपी अग्नि प्रज्वलित हो रही है। इसमें मनुष्य अपने यौवन और धन दोनों की आहुति दे देते हैं।

मोह के समान शत्रु नहीं—बुद्धि का नाश ही मोह है, यह मोह धर्म और अर्थ दोनों को नष्ट कर देता है। इससे मनुष्य में नास्तिकता आदि है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है। मोह और प्रेम दोनों में बड़ा भारी अन्तर है। प्रेम में मनुष्य अपने परिवार के लिए मेहनत पुरुषार्थ से धन अर्जित कर उन्हें अच्छी शिक्षा, अच्छी रहन-सहन की सब सुविधाओं को जुटाएगा और मोह करने वाला गलत तरीके से धन कमा-कमाकर लायेगा, बच्चों में इससे कुसंस्कार पैदा होते हैं, जो सुख का नहीं, दु:ख का कारण बनती है।

क्रोध के समान अग्नि नहीं—क्रोध वह अग्नि है जो दूसरे को जलाने से पूर्व स्वयं को जलाकर राख कर देती है। क्रोध धैर्य और शास्त्र ज्ञान को भी नष्ट कर देता है, क्रोध सब कुछ दग्ध कर देता है, क्रोध के समान कोई दूसरा शत्रु नहीं है।

द्वेष—कुछ लोग दूसरों की उन्नति से जलते रहते हैं, स्वयं कुछ करने का प्रयत्न नहीं करते और प्रयत्नशील, पुरुषार्थी, धनवान्, बुद्धिमान्, ज्ञानवान् व्यक्तियों की उन्नति उनसे सहन ही नहीं होती। अपने दु:खों से ज्यादा उनको दूसरों की उन्नति का दु:ख सताता रहता है।

मनुष्य कर्मफल को हमेशा भूले रहता है, परन्तु मनुष्य को कर्मों का शुभ-अशुभ फल भोगना ही पड़ता है, चाहे वह लाख भुलाए बैठा रहे। वेद में कहा है—

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति। अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्वः पुनरा विशति॥ (अथर्व० 12.3.48)

न्यायकारी परमेश्वर की न्याय व्यवस्था में कोई त्रुटि नहीं है, पाप कर्मों की कोई क्षमा नहीं, वहाँ गुरु पैगम्बर आदि की कोई सिफारिश भी नहीं चलती, मित्रों से भी कोई इस कार्य में सहयोग काम नहीं आता और न उसके कर्मों का फल उसके परिवार का कोई सदस्य पुत्र, पत्नी, बहन-भाई, माता-पिता, मित्र-रिश्तेदार भोगता है, उसे अपने कर्मों का फल स्वयं ही भोगना पड़ता है। भूल जाने से कर्मफल समाप्त नहीं हो जाते। जब भोगोगे तो याद आ जायेंगे।

सत्य यह है कि निर्धन धन चाहता है, नि:सन्तान सन्तान चाहता है, अन्धा आंख चाहता है, मनुष्य सुख (स्वर्ग) चाहता है और ऋषि मुक्ति की कामना करते हैं, जो जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

मुक्ति प्राप्ति का आधार सत्य है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं सत्य ही धर्म है। सत्य से पृथिवी स्थिर है, सूर्य सत्य के बल पर तपता है, सत्य से वायु बहता है, सब कुछ सत्य में ही स्थिर है, संसार में सत्य ही ईश्वर है। सदा सत्य के आधार पर ही धर्म स्थिर है, सत्य ही धर्म की जड़ है, सत्य से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं।

परमेश्वर ने पृथिवी को धारण किया हुआ है, उसी की सामर्थ्य से आकाश ठहरा है, सूर्य और चन्द्र आदि उसी के प्रकाश से प्रकाशमान हैं। उसी के तेज से वायु प्रवाहित होता है और परमेश्वर में ही सब कुछ स्थिर है। परमेश्वर के ताप से अग्नि प्रज्वलित होती है, विद्युत वायु भी उसी के नियम में चलते हैं।

इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों को नियमानुसार कार्य करने का आदेश दिया है और वेद में मुक्ति प्राप्ति के उपाय भी सुझाए हैं। महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में योगशास्त्र का प्रमाण देते हुए लिखते हैं—चित्त की पाँच वृत्तियों को रोकने से और मोक्ष के साधन में सब दिन प्रवृत्त रहने से पाँच क्लेश नष्ट हो जाते हैं। पाँच क्लेश—(1) अविद्या, (2) अस्मिता, (3) राग, (4) द्वेष, (5) अभिनिवेश।

(1) अविद्या—

(i) ईश्वर, जीव, जगत् का कारण, क्रिया क्रियावान्, गुण-गुणी और धर्म-धर्मी हैं, इन नित्य पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध है, इनमें अनित्य बुद्धि का होना, यह अविद्या का प्रथम भाग है।

(ii) मल-मूत्र आदि के समुदाय दुर्गन्धरूप मल से परिपूर्ण शरीर में पवित्र बुद्धि का करना तथा तालाब, बावरी, कुआँ और नदी आदि में तीर्थ और पाप छुड़ाने की बुद्धि करना, एकादशी आदि मिथ्या व्रतों में भूख आदि दु:खों का सहना, अशुद्ध पदार्थों को शुद्ध मानना आदि अविद्या का दूसरा भाग है।

(iii) दु:ख में सुख बुद्धि अर्थात् विषय तृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक, ईर्ष्या, द्वेष आदि दु:ख रूप व्यवहारों में सुख पाने की आशा करना आदि अविद्या का तीसरा भाग है।

(iv) अनात्मा में आत्मबुद्धि अर्थात् जड़ में चेतन भाव और चेतन में जड़ भावना करना, अविद्या का यह चौथा भाग है।

(2) अस्मिता—जीव और बुद्धि को मिले के समान देखना, अभिमान और अहंकार से अपने को बड़ा समझना।

(3) राग—जो संसार में साक्षात् भोगने में आते हैं, उनके संस्कार की

शेष पृष्ठ 7 पर....

एक वाक्य क्या नहीं कर सकता?

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

मेरे प्यारे देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी व्यक्ति द्वारा कहा गया एक वाक्य इतिहास को बिगाड़ भी सकता है और इतिहास को सुधार भी सकता है। एक देशी कहावत है कि **'एक चना क्या भाड़ फोड़ सकता है?'** परन्तु इतिहास इसके विपरीत है। वैसे तो इतिहास में अनेक उदाहरण ऐसे मिलते हैं, पर मैं यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध उदाहरण ही प्रस्तुत करता हूँ।

(1) माता सीता द्वारा कहा गया एक वाक्य—जब श्री रामचन्द्र को अपने पिता दशरथ द्वारा दियेगये रानी कैकेयी को तीन वचनों के आधार पर श्रीराम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा, तब श्रीराम, सरयू नदी को पार करके एक भीषण जंगल में एक कुटिया बनाकर रह रहे थे, तब वहाँ एक विलक्षण घटना घटी। उस कुटिया के चारों तरफ राक्षसों का ही वास था। वहाँ राक्षसों का राजा रावण का ही प्रभुत्व था। सभी राक्षस राजा रावण के अधीन थे। रावण जब सीता के स्वयंवर में सम्मिलित हुआ था और सीता ने श्रीराम के गले में माला डाल दी थी, तभी से रावण ने सीता को हरण करने की इच्छा बना रखी थी। यहाँ उसको एक बहाना भी मिल गया कि रावण की बहन शूर्पणखा श्रीराम या लक्ष्मण से विवाह करना चाहती थी। जब इन दोनों ने उसके प्रस्ताव को इनकार करके उसका अनादर कर दिया, दूसरे शब्दों में उसकी नाक काट दी यानि किसी की बात न मानना ही उसकी नाक काटना होता है। तभी से शूर्पणखा श्रीराम से क्षुब्ध थी और अपने भाई रावण को अपनी नाराजगी बताई और सीता को हरण करने की पूरी रूप-रेखा भी बता दी। रावण ने भी यह एक अच्छा अवसर देखकर अपने एक आज्ञाकारी राक्षस खरदूषण जो मायावादी था और रूप बदलने में बड़ा प्रवीण था, उसको अपने पास बुलाया और उसको एक स्वर्ण रंग का हिरण बनकर सीता के आगे से निकलने की कहकर आगे की पूरी योजना बता दी। इस योजना के अनुसार खरदूषण स्वर्ण रंग का हिरण बनकर सीता के सामने निकला और वह हिरण सीता के मन भा गया। उसके श्रीराम से कहा, पतिदेव! आप इस हिरण को हो सके तो जीवित पकड़कर ले आओ ताकि मैं इसे बच्चे की तरह पाल-पोसकर मन-बहलाव करूँ और यदि जीवित पकड़कर नहीं आवे तो इसे मारकर ले आवें ताकि हम इसकी छाल को मृगछाला के रूप में काम में ले सकें। श्रीराम ने सबसे बड़ी भूल यह की कि सीता के कहने से बिना कुछ सोचे-विचारे ही धनुष-बाण लेकर उस हिरण के पीछे दौड़ पड़े और हिरण मायावी था ही, उसने कुछ दूर जाकर इस प्रकार रोना आरम्भ कर दिया कि **हे लक्ष्मण! मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!** सीता के कान में जब यह आवाज पड़ी तो वह भयभीत हो उठी और अपने देवर लक्ष्मण से कहने लगी कि तुम्हारे भाई पर कोई आपत्ति आ गई है, जाओ, तुम उन्हें आपत्ति से निकालो। लक्ष्मण ने अपनी भाभी को बहुत समझाया कि मेरा भाई श्रीराम ऐसे कमजोर नहीं हैं जो किसी आपत्ति में पड़ सकें। यह कोई राक्षसों की मायावी जाल है। आप चिन्ता मत करो भाई जी थोड़ी देर में ही आ जावेंगे। पर उस समय सीता माता ने जो वचन कहे, उन्होंने पूरे इतिहास को बदलकर रख दिया। उसने उस यति-जति लक्ष्मण से कहा कि **'तेरे मन में पाप आ गया है। तू यह सोचता है कि भाई मर जावे तो सीता तुम्हारी हो जायेगी, पर यह कदापि नहीं होगा।'** लक्ष्मण जैसे महान् तपस्वी के लिए यह शब्द असह्य थे और वह तुरन्त भाई जी की खोज में निकल पड़ा। आगे की जो घटना घटी है वह सर्वविदित है। सीता माता के यही कटु सत्य रामायण की रचना कर डाली।

(2) माता द्रोपदी द्वारा कहा गया कुवाक्य—यह दूसरा दृष्टान्त हमें महाभारत में मिलता है। जब युधिष्ठिर ने जूआ खेलने से पहले अपना अलग राज्य हस्तिनापुर से दूर इन्द्रप्रस्थ में पाँचों भाइयों ने मिलकर बना लिया। तब युधिष्ठिर ने एक बहुत ही सुन्दर कलापूर्ण महल वहाँ बनवाया। इस महल की खूबी यह थी कि जहाँ पानी दीखता था वहाँ जमीन होती थी और जहाँ दरवाजा दीखता था वहाँ दीवार होती थी और जहाँ दीवार दिवार दिखाई देती थी वहाँ दरवाजा होता था। इस महल को देखने के लिए देश-विदेश के अधिकतर राजा-महाराजा आये थे। उनमें युधिष्ठिर का चचेरा भाई दुर्योधन भी आया था। दुर्योधन जब महल देखने लगा तब उसे जहाँ पानी दिखाई देता था, तब वह धोती को उठा लेता था और जहाँ धरती दिखाई देती थी तब वह धोती को नीचे कर लेता था और धोती भीग जाती थी। जब उसे कहीं दरवाजा दीखता था तो वह चलने लग जाता था और उसका माथा दीवार से टकरा जाता था, इस प्रकार वह अपने आप में बड़ा शर्मिन्दा हो रहा था। तभी पाण्डवों की धर्मपत्नी ऊपर बैठी दुर्योधन को देख रही थी। द्रोपदी ने व्यंग्य कसते हुए कहा कि **'अन्धे के अन्धा ही पैदा होता है।'** यह सुनते ही दुर्योधन आगबबूला हो गया और मन में ठान ली कि इसका बदला मुझे जरूर लेना है। वह तुरन्त वहाँ से आ गया। अपने मामा शकुनि से सारी बातें कही और किसी भी प्रकार इस अपमान का बदला लेने की कही। आगे जो कुछ हुआ वह सर्वविदित है। महाभारत जैसे महायुद्ध का होना द्रोपदी के व्यंग्यात्मक कथन का ही दुष्परिणाम था।

(3) चाणक्य द्वारा ली गई प्रतिज्ञा—मध्यकाल में मगध के राजा महानन्द ने चाणक्य का अपमान किया था, तब महान् नीतिवान् चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं मगध राज्य का विनाश करके ही अपनी चोटी को बाँधूँगा अन्यथा खुली ही रखूँगा। इसी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए चाणक्य ने एक होनहार बालक जो अपने साथी बच्चों के साथ खेल रहा था और उसी राजा की दासी का लड़का था, उसकी योग्यता को देखकर उसको अपने पास रखकर उसे शस्त्र विद्या में निपुण किया और उसी के द्वारा महानन्द को पराजित करवाया और मगध का राजा चन्द्रगुप्त को बनाया। यह था चाणक्य के अपमान का बदला जिसके कारण मगध का महान् सम्राट मिट्टी में मिल गया।

(4) गुरुवर स्वामी विरजानन्द द्वारा पूछा गया प्रश्न—सबसे अधिक यदि किसी एक वाक्य का प्रभाव पड़ा है तथा संसार को लाभ पहुँचा है, तो वह है गुरुवर विरजानन्द द्वारा ब्रह्मचारी दयानन्द से पूछा गया प्रश्न--**'तुम कौन हो?'** जब महर्षि दयानन्द किसी सच्चे गुरु की खोज में घूम रहे थे, तब स्वामी पूर्णानन्द जी, जो स्वामी विरजानन्द के गुरु थे, उनके बतलाने से ब्र० दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया मथुरा में सन् 1860 में पहुँचे, तब कुटिया बन्द थी। ब्रह्मचारी दयानन्द ने आवाज लगाई, **'कृपया दरवाजा खोलें।'** अन्दर से आवाज आई कि आप कौन हैं? तब ब्र० दयानन्द ने कहा, 'मैं यही जानने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ?' बस, यह उत्तर क्या था, मानो विश्व-कल्याण का संदेशवाहक था। विरजानन्द जी ने जब यह उत्तर सुना तो वे गद्गद् हो गये और समझ गये कि आज मेरे दरवाजे पर वही व्यक्ति खड़ा है जिसकी मुझे वर्षों से प्रतीक्षा थी। विरजानन्द जी ने दरवाजा खोला, दयानन्द ने गुरुजी के चरण छूकर नमस्ते की और कहा कि मैं ब्र० दयानन्द हूँ और आपसे विद्या सीखने आया हूँ। गुरुजी का पहला ही प्रश्न था कि तुमने अभी तक क्या-क्या पढ़ा है? दयानन्द ने उन सब पुस्तकों के नाम बता दिए जो उसने पढ़े थे। तब गुरुजी ने कहा दयानन्द! ये सब अनार्ष-ग्रन्थ हैं, पहले तुम इनको यमुना में बहाकर आओ, फिर मैं तुम्हें आर्षग्रन्थ पढ़ाऊँगा। दयानन्द एक पक्के गुरुभक्त थे, उसने वैसा ही किया और गुरु विरजानन्द के पास पढ़ने लग गये। स्वामी विरजानन्द का स्वभाव बड़ा क्रोधी और हठी था। उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए दयानन्द ने लगभग तीन साल में पूरी विद्या पढ़ ली। गुरुजी को लौंग खाने का चाव था।

विद्या प्राप्ति पर दयानन्द कुछ लौंग लेकर गुरुजी के पास गये और विनम्र निवेदन करते हुए गुरुदक्षिणा के रूप में गुरुजी को लौंग देने की कही, तब गुरुजी की आँखों में आँसू भर आये और कहा, 'दयानन्द! मैंने तुझे गुरुदक्षिणा के रूप में लौंग लेने के लिए नहीं पढ़ाया।' तब दयानन्द ने कहा, 'गुरुवर आप जो आज्ञा दें, आपका शिष्य उसी को देने के लिए तैयार है।' तब गुरुजी ने रोते हुए कहा कि मैं तो दयानन्द, तेरा जीवन ही लेना चाहता हूँ। आगे और क्या कहा कि विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला है। गरीब, असहाय की कोई नहीं सुनता है। सारी जनता अन्धकार में भटक रही है। तुझे वेद-ज्ञान द्वारा इस अन्धकार को मिटाना है और असहाय लोगों को सहारा बनना है। स्वामी दयानन्द **'तथास्तु'** कहकर गुरुजी का आशीर्वाद लेकर कार्यक्षेत्र में कूद पड़े।

यह सर्वविदित है कि स्वामी दयानन्द कितने दुःखों व कष्टों को जीवन भर सहन करते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त किया और अपने गुरुजी को दिये गए वचनों का पालन किया। यह सब **'आप कौन हो'** वाक्य का ही सुपरिणाम था। ईश्वर महर्षि दयानन्द की जलाई हुई अग्नि को और अधिक प्रज्वलित करे, यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

ओ३म्

स्वाध्याय का लाभ

-: वेद-मन्त्र :-

अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत।
यत् सोमेसोम आभुवः ॥ 4 ॥ 188 ॥ (सामवेद)

यह स्वाध्याय करने वाला वत्स ज्ञान (श्रुत) को ही अपनी शरण (कक्ष) बनाता है सो 'श्रुतकक्ष' नाम वाला हो जाता है और प्रभु से कहता है कि [अया] (अनया) = इस [धिया] = बुद्धि से [च] = और [अया गव्यया] = इस ज्ञानेन्द्रियों के समूह से ऐ [पुरुणामन् पुरुष्टुत] = प्रभो! यह तो निश्चित ही है [यत्] = कि [सोमे सोमे] = प्रत्येक विनीत बने पुरुष में [आभुवः] = आप प्रकट हुआ करते हैं।

स्वाध्याय से तीन लाभ होते हैं—पहला नियमित जीवन, दूसरा निर्मल दीप्ति, तीसरा लाभ यह है कि मनुष्य की बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों का सुन्दर विकास होता है। व्यायाम से जैसे हाथ की शक्ति का विकास होता है उसी प्रकार स्वाध्याय ज्ञानोपकरण बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों की व्यायाम ही तो है। सो इससे उनका विकास होता ही है।

बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों के विकास होने पर यह संसार में एक महती शक्ति का कार्य करते हुए अनुभव करता है। उसी प्रभु का नाम यह खूब जप करता है और उसी का निरन्तर स्तवन करता है। उसका जप व स्तवन, पुरु है (पृ पालनपूरणयोः) इसका पालन व पूरण करने वाला है। इसे अभिमान आदि दुर्भावनाओं का शिकार होने से बचाता है और इसकी न्यूनताओं को दूर करता है।

जितना-जितना इसका जीवन पूर्ण होता जाता है उतना-उतना ही यह सोम बनता चलता है। एवं स्वाध्याय का चौथा लाभ यह था कि मनुष्य में संसार की संचालक रहस्यमयी शक्ति का चिंतन होता है और यह उसका स्तवन व जप करता है। इससे पांचवां लाभ यह होता है कि यह उत्तरोत्तर विनीत बनता जाता है। इस सोमे-सोमे= विनीत और विनीत ही श्रुतकक्ष में आभुवः=प्रभु का प्रकाश होता है। यह श्रुतकक्ष प्रभु का साक्षात्कार कर पाता है। यह मानव जीवन का चरम उत्थान है—इसी में इस जीवन की सार्थकता व सफलता है। यहां यह जीवन समाप्त होकर मानव को मुक्त कर देता है।

भावार्थ—स्वाध्याय से हम बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियों का विकास करें, संसार की संचालक शक्ति के नामों का जप व स्तुति करने वाले बनें, सोम बनकर प्रभु का दर्शन करें।

—आचार्य बलदेव

महर्षि महिमा गान

दयानन्द देव-वेदों का उजाला लेके आये थे,
करों में ओ३म् की पावन पताका लेके आये थे।
न थे धन धाम मठ मन्दिर न संग चेली न चेला थे,
हृदय में अटल विश्वास प्रभु का लेके आये थे॥
अविद्या-सिन्धु से अगणित जनों को पार करने को,
परम सुखदायिनी सतज्ञान नौका लेके आये थे॥
गौ विधवा दलित दुखिया अनाथों दीनजन के हित,
नयन में अश्रु, मानस में करुणा लेके आये थे॥
कोई माने न माने सच तो ये ऋषिराज ही पहले,
स्वराज्य स्थापना का मन्त्र लेके आये थे॥
पिलाया जहर का प्याला उन्हीं नादान लोगों ने,
कि वे जिनके लिए अमृत का प्याला लेके आये थे॥
'प्रकाश' आदर्श शिक्षा पुनः विस्तार करने को,
वही प्राचीन गुरुकुल का सन्देशा लेके आये थे॥

भेंटकर्त्ता : **सूबेदार करतारसिंह आर्य-सेवक,**
आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत

वेद में वर्ण-व्यवस्था

❑ **स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा**

मनुष्य जाति के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये वर्ण कहाते हैं। वेद रीति से इनके दो भेद हैं—एक आर्य और दूसरा दस्यु। इस विषय में यह प्रमाण है कि **'विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो०'** (ऋग्वेद 1/51/8) अर्थात् इस मन्त्र से परमेश्वर उपदेश करता है कि हे जीव! तू आर्य अर्थात् श्रेष्ठ और दस्यु अर्थात् दुष्ट स्वभाव युक्त डाकू आदि नामों से प्रसिद्ध मनुष्यों के ये दो भेद जान ले तथा **'उत शूद्रे उत आर्ये'** इस मन्त्र से भी आर्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और अनार्य अर्थात् अनाड़ी जो कि शूद्र कहाते हैं, ये दो भेद जाने गये हैं। तथा **'असुर्या नाम ते लोका०'** इस मन्त्र से भी देव और असुर अर्थात् विद्वान् और मूर्ख ये दो ही भेद जाने जाते हैं। और इन्हीं दोनों के विरोध को देवासुर संग्राम कहते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार भेद गुण कर्मों से किये गये हैं।

वर्णो वृणोतेः ॥ (निरुक्त अध्याय 2/ खण्ड 3)
ब्रह्म हि ब्राह्मणः। क्षत्रꣳ हीन्द्रः क्षत्रꣳ राजन्यः।
(शतपथ काण्ड 5। अ०1। ब्रा० 1। क० 11)
बाहू वै मित्रावरुणौ पुरुषो गर्तः ॥ इत्यादि।
(शत० काण्ड 5। अ० 4। ब्रा० 1। क० 15)

(वर्णो०) इनका नाम वर्ण इसलिए है कि जैसे जिसके गुण, कर्म हों, वैसा ही उसको अधिकार देना चाहिये। (ब्रह्म हि०) ब्रह्म अर्थात् उत्तम कर्म करने से उत्तम विद्वान् ब्राह्मण वर्ण होता है। (क्षत्रꣳ हि) परम ऐश्वर्य (बाहू०) बल, वीर्य होने से मनुष्य क्षत्रिय वर्ण होता है। इत्यादि।

यजुर्वेद के इकत्तीसवें अध्याय को पुरुष सूक्त कहते हैं। इस सूक्त में परमेश्वर के गुणों का वर्णन है और परमात्मा ने सृष्टि की रचना कैसे की है यह बताया गया है। इसमें वर्णव्यवस्था के विषय में प्रश्नोत्तर रूप में मन्त्र इस प्रकार है—

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
(यजुर्वेद अध्याय 31। मन्त्र 10)

अर्थ—(यत्पुरुषं०) पुरुष उसको कहते हैं कि जो सर्वशक्तिमान् ईश्वर कहाता है। (कतिधा व्यकल्पयन्) जिसके सामर्थ्य का अनेक प्रकार से प्रतिपादन करते हैं, क्योंकि उसमें चित्र-विचित्र बहुत प्रकार का सामर्थ्य है। अनेक कल्पनाओं से जिसका कथन करते हैं। (मुखं किमस्यासीत्) इस पुरुष के मुख अर्थात् मुख्य गुणों से इस संसार में क्या उत्पन्न हुआ है? (किं बाहू) बल, वीर्य, शूरता और युद्ध आदि विद्यागुणों से इस संसार में कौन पदार्थ उत्पन्न हुआ है? (किमूरू) व्यापार आदि मध्यम गुणों से किसकी उत्पत्ति हुई है? (पादा उच्येते) मूर्खपन आदि नीच गुणों से किसकी उत्पत्ति होती है? इन चारों प्रश्न के उत्तर ये हैं कि—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत॥
(यजुर्वेद अध्याय 31। मन्त्र 11)

अर्थ—(ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्) इस पुरुष की आज्ञा के अनुसार जो विद्या, सत्यभाषणादि उत्तम गुण और श्रेष्ठ कर्मों से ब्राह्मण वर्ग उत्पन्न होता है, वह मुख्य कर्म और गुणों के सहित होने से मनुष्यों में उत्तम कहाता है। (बाहू राजन्यः कृतः) और ईश्वर ने बल, पराक्रम आदि पूर्वोक्त गुणों से युक्त क्षत्रिय वर्ण को उत्पन्न किया है। (ऊरू तदस्य यद्वैश्यः) खेती, व्यापार और सब देशों की भाषाओं को जानना तथा पशुपालन आदि मध्यम गुणों से वैश्यवर्ण सिद्ध होता है। (पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत) जैसे पग सबसे नीच अङ्ग है, वैसे मूर्खता आदि नीच गुणों से शूद्र वर्ण सिद्ध होता है।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, महर्षि दयानन्दः)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

सतलोक आश्रम विवाद 2006 से शुरु हुआ, प्रशासन ने नहीं लिया गंभीरता से

ऐसे बढ़ता गया करौंथा आश्रम विवाद

रोहतक (मनोज वर्मा) : करौंथा में 12 मई को हुई हिंसा एक दिन का परिणाम नहीं है। सतलोक आश्रम विवाद की चिंगारी 2006 में सुलगी और 2013 तक शोला बन गई। नौ जून 2006 में झज्जर के कोठी दयालधाम आश्रम के भक्त ने **'शैतान बना भगवान'** एक किताब लिखी थी, जिसके विरोध में रामपाल दास के अनुयायियों ने आश्रम पर हमला किया। पंचायत में मामला सुलझवाया गया। पंचायत प्रतिनिधियों ने आश्रम की संदिग्ध गतिविधियों के बारे में मुख्यमन्त्री को बताया। ग्रामीणों ने रामपाल के अनुयायियों को आश्रम में जाने से रोकने के लिए जाम लगाया। 12 जुलाई को हिंसा हुई जिसमें एक की मौत हो गई। इसके बाद आश्रम भी प्रशासन ने कब्जे में लिया लेकिन 2013 तक रामपालदास ने कोर्ट में केस जीत लिया। दोबारा फिर आश्रम शुरू होते देख ग्रामीण और आर्यसमाजी भड़क गए।

नौ अप्रैल को आश्रम पर पथराव और झज्जर हाईवे पर जाम लगाया। इसके बावजूद न तो प्रशासन ने इसे गंभीरता से लिया और न ही पुलिस ने। 10 अप्रैल को रामपाल के अनुयायी आश्रम में जमा हो गए। शांति बनाए रखने के लिए अनुयायियों को आश्रम में आने से रोका जा सकता था। आर्यसमाजियों ने आन्दोलन का ऐलान किया। 12 मई को फायरिंग में एक महिला समेत दो युवकों की जान गई, 150 से ज्यादा आन्दोलनकारी और पुलिसकर्मी घायल हुए। रोडवेज की तीन बसें फूंक दी व 12 बसों के शीशे तोड़ दिए। कई बाइक और स्कूटी आग के हवाले कर दी गई। 15 मई को आश्रम खाली भी करवा दिया, लेकिन आन्दोलन खत्म नहीं हुआ। सवाल ये है कि हिंसा हुई क्यों? क्या लोगों की जान बचाई जा सकती थी? आकलन करें तो एक बात जवाब के रूप में सामने आती है कि हिंसा रोकी जा सकती थी। मसलन पुलिस और प्रशासन, सूचना तंत्र नियम और विवेक से काम लेते। पुलिस के जवानों ने संयम खो दिया, आन्दोलनकारियों को समझाने में प्रशासन नाकाम रहा और सूचनातंत्र तो पूरी तरह फेल। करौंथा में आंदोलन की गंभीरता को भांपने में पूरा तंत्र नाकाम रहा। इसका नजीजा हुआ कि जबरदस्त हिंसा हुई।

पुलिस आन्दोलनकारियों के सामने असहाय नजर आई

आर्यसमाजियों ने आन्दोलन को लेकर संपर्क अभियान चलाया हुआ था। इसके बावजूद 12 मई को करौंथा में आन्दोलनकारियों को हलके में लिया गया। दंगे को नियंत्रित करने के लिए पुलिस के पास जरूरी उपकरण नहीं थे। जो उपकरण थे उनका उचित समय पर प्रयोग नहीं किया। परिणाम के रूप में भीषण हिंसा सामने आई। आन्दोलनकारियों को रोकने के लिए पुलिस के पास रबड़ की गोली नहीं थी, बेरिकेट्स नहीं थे। ऐसे में पुलिस आन्दोलनकारियों के सामने असहाय नजर आई। वहीं पानी की बौछार करने वाली गाड़ी थी, लेकिन उचित समय पर प्रयोग नहीं किया गया। 12 मई को सुबह आर्यसमाजी मन्दिर में ह वन कर रहे थे तो प्रशासन वहाँ से उनसे बात कर सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आन्दोलनकारी जब सतलोक आश्रम की ओर बढ़ने लगे तो पुलिस ने उन्हें नियन्त्रित करने का ठोस प्रयास नहीं किया, नियंत्रित करने की बजाय सीधे फायरिंग शुरू कर दी। आन्दोलनकारियों के वाहनों को करौंथा पहुँचने से रोकने के लिए रास्तों में रुकवा कर उन्हें उग्र होने का मौका दिया। (साभार-हरिभूमि)

आन्दोलन समाप्त : झज़र-रोहतक हाईवे शुरु, आश्रम के सामने खेतों में चार ग्रामीण धरने पर बैठेंगे

करौंथा में सड़क से हटे आन्दोलनकारी

रोहतक। पाँच दिन से आन्दोलन की आग में झुलस रहे करौंथा गाँव में बृहस्पतिवार शाम शांति की आहट सुनाई दी। शाम चार बजे सड़क पर डटे आन्दोलनकारी ग्रामीण अपने घरों को चले गए और रोहतक-झज्जर हाईवे पर वाहनों का आना-जाना शुरू हो गया। इसके बाद प्रशासन और लोगों ने राहत की सांस ली।

बुधवार को प्रोमिला के दाह संस्कार के बाद भी ग्रामीण सड़क पर गए थे। बृहस्पतिवार सुबह करीब छह बजे एक बार तो टेंट हटा लिया गया था लेकिन दो घंटे बाद ही दोबारा आन्दोलन स्थल पर टेंट लगा दिया गया। दोपहर होते-होते 400 से अधिक ग्रामीण सड़क पर जमा हो गये थे। इनमें काफी संख्या में महिलाएँ भी शामिल थीं। इस दौरान इनका नेतृत्व स्वामी ब्रह्मानन्द कर रहे थे। ग्रामीणों में इसी बात को लेकर गुस्सा था कि तीन लोगों की शहादत के बाद भी आश्रम की एक ईंट नहीं उखाड़ी जा सकी लेकिन दोपहर बाद लोगों की भीड़ धीरे-धीरे कम होती गई। शाम चार बजे ब्रह्मानन्द ने आन्दोलन कारियों के बीच घोषणा की कि आचार्य बलदेव की प्रशासन से बातचीत हुई है।

डीसी ने उन्हें इस बात की मंजूरी दे दी है कि चार ग्रामीण सतलोक आश्रम के सामने खेतों में टेंट लगाकर शांति पूर्वक तरीके से धरने पर बैठ सकते हैं ताकि आश्रम की किसी भी गतिविधि पर नजर रखी जा सके। इस घोषणा के तुरन्त बाद लोग उठकर अपने घरों की ओर चले गए और धरनास्थल से टेंट भी उखाड़ लिया। करीब एक घंटे बाद गांव के सामने सड़क पर सीआरपी के जवाने ने फ्लैग मार्च शुरू कर दिया। वहीं जिला प्रशासन ने क्रेन से सड़क पर जलाए टैंकर व पेड़ हटवाकर झज्जर-रोहतक हाईवे शुरू कर दिया। इससे पाँच दिन से सूने पड़े हांईवे पर लोगों की आवाजाही शुरू हो गई। (साभार-हरिभूमि)

नारों के बीच उदयवीर की शवयात्रा बलियाना होकर लाढ़ौत पहुँची, माँ बोली

मेरे बेटे ने बलिदान दिया है

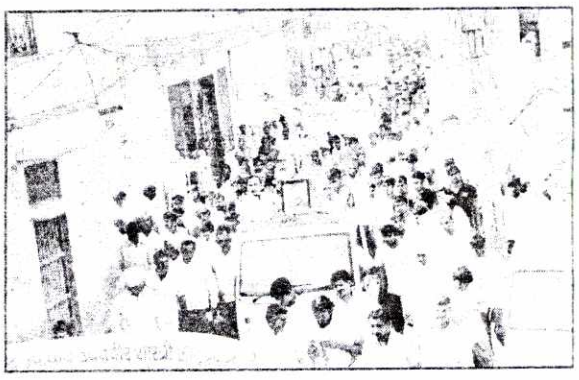

बेटे उदयवीर को देखकर माँ शीला देवी फूट-फूटकर रोने लगती है। महिलाएँ उसे ढांढस बंधाती हैं लेकिन उसे इस बात का गौरव भी है कि उसके बेटे ने बलिदान दिया है। शीला कहती हैं मेरे बेटे ने कुर्बानी दी है। वह समाज के लिए अपनी जान देकर चला गया। बृहस्पतिवार को उदयवीर की अन्तिम शवयात्रा पैतृक गाँव बलियाना पहुँची तो पूरा गाँव उसके दर्शनों के लिए गलियों में आ गया।

इससे पहले सुबह करीब आठ बजे पीजीआई से उदयवीर का पार्थिव शरीर फूलों से सजी गाड़ी में रखा गया। वहाँ मौजूद सैकड़ों लोगों ने **'जब तक सूरज-चाँद रहेगा, उदयवीर तेरा नाम रहेगा'**, **'उदयवीर शास्त्री अमर रहे'** के गगनभेदी नारे लगाने शुरू कर दिये। उदयवीर की शवयात्रा पहले उसके पैतृक गाँव बलियाना ले जाई गई। गाँव के मन्दिर के सामने दस मिनट तक गाँव के लोगों और परिजनों ने उसके अन्तिम दर्शन किये। यहाँ माहौल काफी गमगीन था। बलियाना के अलावा आसपास के कई गाँव के लोग यहाँ पहुँचे हुए थे। इसके बाद बोहर होते हुए अन्तिम यात्रा 12 बजे लाढौत गुरुकुल पहुँची। यहाँ पहुँचते ही बच्चों ने जोर-जोर से नारे लगाने शुरू कर दिये। करीब एक घंटे तक लोगों के दर्शन करने के बाद आश्रम के खेल के मैदान में वैदिक मन्त्रों के बीच उनका दाह-संस्कार कर दिया गया। उदयवीर के गुरु **आचार्य हरिदत्त** और बड़े **भाई नीरज** ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस मौके पर पिता रामफल, आचार्य बलदेव, आचार्य विजयपाल, स्वामी आर्यवेश समेत सैकड़ों लोग मौजूद थे। (साभार-हरिभूमि)

आर्यसमाज के आन्दोलन ने दी भारी कुर्बानी

रोहतक 16 मई 2013 (सभा संवाददाता) : करौंथा (रोहतक) स्थित सतलोक आश्रम तथा आर्यसमाज के आन्दोलन आर्यसमाज की सभी मांगों को जिला प्रशासन द्वारा मंजूर किये जाने पर आज सायं समाप्त हो गया।

दोनों धार्मिक संगठनों का विवाद 2006 से चल रहा है। सतलोक आश्रम के संचालक रामपालदास ने जब अपनी पुस्तकों व दैनिक समाचार पत्रों में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' के विरोध में लेख प्रकाशित करने शुरू किये तो रामपाल दास के विरुद्ध आर्यसमाज ने आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान व आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में शान्तिपूर्वक आन्दोलन शुरू किया गया। किन्तु रामपाल दास के समर्थकों द्वारा शान्ति पूर्वक प्रदर्शन कर रहे आर्यसमाज के लोगों पर छतों पर चढ़कर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं, जिससे बाघपुर जिला झज्जर निवासी 'सोनू' नामक 18 वर्षीय युवक की मृत्यु हो गई तथा अनेक नवयुवक बुरी तरह से जख्मी हो गये जिसका परिणाम यह हुआ कि जिला प्रशासन द्वारा इस आश्रम को बन्द करना पड़ा तथा रामपाल दास को यह आश्रम छोड़कर हिसार जिले में स्थित बरवाला आश्रम में शरण लेनी पड़ी तथा फिर आश्रम पर अधिकार को लेकर हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी। किन्तु सुप्रीम कोर्ट द्वारा आश्रम का कब्जा रामपाल दास को सौंपने के बाद आर्यसमाज के लोगों में विरोध की लहर छा गई।

प्रशासन द्वारा आश्रम का कब्जा रामपाल दास के समर्थकों को सौंपने के पश्चात् काफी संख्या में सत्संगी आश्रम के अन्दर इकट्ठे होने शुरू हो गये। आर्यसमाज के नेताओं ने खाप मीटिंगें व कई बार आर्यसमाज के उच्च कोटि के व्यक्तियों की मीटिंग बुलाकर अपना विरोध दर्ज करवाया। जलूस निकाले, प्रशासन के माध्यम से सरकार तक अपना विरोध जताया।

आश्रम के चारों ओर का इलाका आर्यसमाज का गढ़ है तथा आज भी अनेक लोग आर्यसमाज के समर्थक हैं, जो रामपाल दास के ढोंगी स्वरूप तथा आश्रम में चल ही समाज-विरोधी गतिविधियों के सख्त खिलाफ रहे हैं। आर्यसमाज के विरोध के चलते जिले

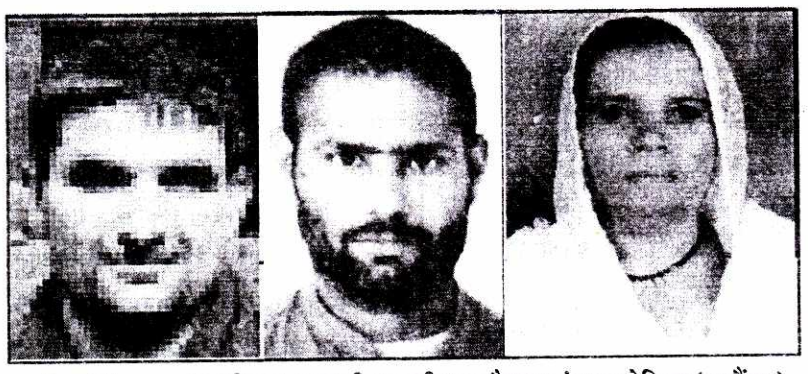

शहीद संदीप कुण्डू (पानीपत), उदयवीर शास्त्री (लाढ़ौत) एवं बहन प्रोमिला (करौंथा)

के प्रशासन ने धारा-145 के अन्तर्गत 30 अप्रैल 2013 तक आश्रम को सील करके अपने कब्जे में लेने का एलान किया था। किन्तु जिला प्रशासन व सरकार ने आर्यसमाजियों की चेतावनी को हल्के से लिया तथा 30 अप्रैल तक आश्रम को सील करने की ओर कोई कार्यवाही नहीं की।

तो प्रशासन के ढुलमुल रवैया व प्रशासन के वायदा के खिलाफ 5 मई 2013 को इतवार के दिन खाप के चौधरियों व आर्यसमाज के प्रभावी लोगों की एक मीटिंग दयानन्दमठ में आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में 12 मई 2013 को हुई जिसमें अल्टीमेटम दिया गया कि या तो 12 मई 2013 तक आश्रम को खाली करवा दिया जाये अन्यथा आर्यसमाज गाँव करौंथा में शान्तिपूर्वक धरना प्रदर्शन करके, तय कार्यक्रम के अनुसार आचार्य बलदेव व उनके समर्थकों ने 12 मई को सुबह 8 बजे गरीबदास के छत्तरी वाले मन्दिर में हवन करके आश्रम की ओर कूच करके शान्तिपूर्वक प्रदर्शन शुरू ही किया था कि प्रशासन द्वारा आश्रम की सुरक्षा में भारी संख्या में पुलिस बल, अर्धसैनिक बल, CRPF की भारी संख्या में टुकड़ियों को तैनात कर दिया तो अचानक पुलिस वालों ने आचार्य बलदेव को पकड़कर जबरदस्ती अपने वाहन में बैठाकर किसी अज्ञात स्थान पर ले गई।

आचार्य जी के साथ इस प्रकार दुर्व्यवहार से प्रदर्शनकारी भड़क गये तथा पुलिस व प्रदर्शनकारियों में हिंसक झड़पें शुरू हो गईं जिसमें गुरुकुल लाढौत में कार्यरत तथा बलियाना गाँव निवासी उदयवीर शास्त्री, गाँव शाहपुर (पानीपत) निवासी नौजवान संदीप कुण्डू व गाँव करौंथा की 40 वर्षीय महिला प्रोमिला की पुलिस की गोली-बारी में मृत्यु हो गई जिससे जनता भड़क गई तथा अगले दिन 13 मई को आस-पास के गाँवों के नौजवानों, महिलाओं व सभी नागरिकों में बहुत भारी गुस्सा भर गया तथा लाठी, गडांसी व कुल्हाड़ी तथा अन्य घातक हथियार लेकर आश्रम को तहस-नहस करने व पुलिस फोर्स से लड़ने-भिड़ने को तैयार हो गई तथा इलाके में भारी गुस्सा व क्षोभ भर गया तब जाकर सरकार व प्रशासन की नींद टूटी व ग्रामीणों ने प्रोमिला का शव रोहतक-झज्जर राजमार्ग पर रखकर धरना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार रिवाड़ी जाने वाली N.H.-71 बन्द होने से सरकार पंगु होगई तथा आर्यसमाजियों की मांगों पर मध्यस्थों के द्वारा समझौता वार्ता शुरू हो गई, किन्तु लोगों के भारी गुस्से का इजहार करते हुए प्रशासन के उच्च अधिकारी आर्यसमाज के शीर्ष नेतृत्व की मांगों को मानते हुए सतलोक आश्रम को खाली करवाने पर सहमत हो गई तथा फिर अगले दिन सतलोक आश्रम के बाहर आने से मना करने पर, प्रशासन के हाथ-पाँव फूल गये तथा JCB मंगवाकर दीवार तोड़कर आश्रम खाली कराने का प्रयास ही किया था कि बरवाला आश्रम से एक फोन काल द्वारा आश्रम वासी आश्रम खाली करने को तैयार हो गये। तभी सायंकाल प्रशासन द्वारा 50-52 रोडवेज की बसों में रामपाल दास समर्थकों को भरकर पुलिस की सुरक्षा में बरवाला (हिसार) आश्रम में पहुँचाना शुरू कर दिया, किन्तु जान-बूझकर पाँच सौ के लगभग हथियारबन्द समर्थक आश्रम के अन्दर ही रहे। किन्तु आर्यसमाज के नेता पूरी तरह से खाली करवाने तथा आर्यसमाज के 11 सदस्यीय कमेटी को आश्रम को अन्दर से दिखाने की शर्त लगाने पर अगले दिन पुनः शेष 500 व्यक्तियों को आश्रम से हटाकर सील किये जाने पर समझौता वार्ता पुनः शुरू हो गई तथा आर्यसमाज द्वारा अपना छः सूत्रीय मांगपत्र पूरा किये जाने, मृतकों को 20-20 लाख रुपये देने व परिवार के एक व्यक्ति को रोजगार देने तथा सभी बन्द आर्यसमाजियों को रिहा किये जाने सम्बन्धी सभी मांगों को मान लिये जाने पर आन्दोलन को समाप्त करने की घोषणा की गई तथा 15 मई को सायंकाल करौंथा की प्रोमिला की अन्त्येष्टि की गई तथा 16 मई को दोपहर उदयवीर शास्त्री का अन्त्येष्टि-संस्कार गुरुकुल लाढौत में करने की घोषणा की गई तथा शास्त्री जी का शव पहले उनके गाँव बलियाना ले जाया गया तथा फिर भारी जनसमूह के साथ जयकारे लगाते हुए— **'उदयवीर शास्त्री अमर रहे'** के नारों व **'जब तक सूरज चाँद रहेगा, तब तक शास्त्री जी का नाम रहेगा'** के नारों के साथ पूर्ण वैदिक रीति-रिवाजों के साथ 16 मई 2013 को अन्तिम संस्कार किया गया।

आर्यसमाज ने भारी बलिदान देकर ढोंगी व समाज में व्यभिचार फैलाने वाले पाखण्डी रामपाल दास को जड़ से उखाड़ने की घोषणा के साथ आन्दोलन समाप्त किया। इस प्रकार 12 मई से 16 मई तक पाँच दिनों तक चले इस आन्दोलन ने आर्यसमाजियों की एकजुटता व अपनी उग्र स्वरूप को दिखाते हुए सरकार व प्रशासन को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया।

यदि प्रशासन व सरकार आर्य समाज की शक्ति व आर्यसमाज के शीर्ष नेता आचार्य बलदेव जी के त्याग, तपस्या व जनमानस में उनकी लोकप्रियता का भी आभास हो गया और प्रशासन व सरकार ने आर्यसमाजियों की सभी छः माँगों को मानकर अपनी बेवकूफी व हठधर्मिता का प्रदर्शन किया, किन्तु इस आन्दोलन में आर्यसमाज को अपने बहुमूल्य तीन नौजवानों को खोना पड़ा, जिसकी क्षतिपूर्ति करनी मुश्किल होगी।

आचार्य उदयवीर व संदीप कुण्डू आर्यसमाज के चमकते सितारे थे, जिन्होंने अपनी अमूल्य बलिदान देकर आर्यसमाज के झण्डे को बुलन्द किया तथा तानाशाही प्रवृत्तियों, ढोंगी, पाखण्डी बाबाओं की पोल खोलने में अपनी पूर्ण जवानी अर्पित कर दी।

नारी नर से हीन नहीं

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

वेद में केवल मनुष्य जाति है, पुरुष और स्त्री को वर्ग बताया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

वैदिक काल में नारी का, ऊँचा बहुत स्थान था।
गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा का, जग में बड़ा मान था।
ब्रह्मचारिणी रहती थी, आचरण उनका महान् था।
वेदविद्या में पारंगत थीं, होता शंकाओं का समाधान था।

लीलावती ने गणित विद्या में, भारत का मान बढ़ाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

भक्त नारियों का जीवन भी, श्रेष्ठ और महान् था।
शबरी मीरा और रबिया का, भक्ति में उच्च स्थान था।
ऋषि मार्ग को नित्य बुहारना, शबरी का मुख्य काम था।
कंद मूल का भोजन और फूस की कुटिया उसका धाम था।

विष के प्याले और विषधर को, मीरा ने गले लगाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

दुर्गाबाई चेनम्मा अहल्या और लक्ष्मीबाई भी महान् थी।
रणभूमि में डटी रहीं, तब ऊँची उनकी शान थी।
जीनत महल और रजिया बेगम भी, स्वदेश पर कुर्बान थी।
मातृभूमि रक्षार्थ मरना, उनकी अपनी आन थी।

वीरांगनाओं का देख शौर्य था, दुश्मन भी घबराया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

रानी कर्णावती ने भी, चित्तौड़ दुर्ग में हुंकार लगाई।
सैन्य सहायता मंगवाने खातिर, राखी हुमायूं को भिजवाई।
शत्रु सिर पर आन चढ़ा तब, उसने चिता चुनवाई।
निज आन बान मर्यादा हेतु, अग्नि में छलांग लगाई।

देर से पहुँचा हुमायूँ वहाँ, सब दृश्य देखकर पछताया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

विद्योत्तमा भी अपने समय में, थी संस्कृत की विदुषी महान्।
कालिदास को महामूर्ख तब, मानता था सकल जहान।
पत्नी की फटकार से वह, बन गया था बड़ा विद्वान्।
अस्ति कसति वाक्विशेष से, रच दिये तीन काव्य महान्।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक रचकर, महापण्डित कहलाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

सावित्री फूलेबाई ने भी, नारी का सम्मान बढ़ाया था।
ऐनीबेसेन्ट सरोजनी, कस्तूरबा ने, साहस खूब दिखाया था।
भारत की आजादी खातिर, सब ने अलख जगाया था।
इन्दिरा गाँधी ने भी दुनिया में, ऊँचा नाम कमाया था।

नूरजहाँ, लता और ऊषा ने, मधुर स्वर संगीत रचाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

किरण बेदी और दीपा मेहता ने, पुलिस को दी नई पहचान।
कल्पना चावला ने अन्तरिक्ष में, खूब बढ़ाया भारत का मान।
नारी नर से हीन नहीं सदा ऊँचा रहा है इनका स्वाभिमान।
बेटे से ज्यादा बेटी ने, सदा बढ़ाया कुल गौरव मान।

बेटों से बेटी कभी कम नहीं, बेटी ने ही जगत् रचाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया॥

सभा ने खरीदी आश्रम की दो कनाल जमीन

रोहतक। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष आचार्य बलदेव जी ने बृहस्पतिवार को करौंथा मामले को समाप्त बताते हुए ग्रामीणों से शांति बनाए रखने की अपील की है। दयानन्दमठ में देर शाम पत्रकारवार्ता में उन्होंने कहा कि वे नहीं चाहते कि उनकी वजह से सूबे में फिर हिंसा हो। वे सदैव शांति के पुजारी रहे हैं। इस दौरान उन्होंने जानकारी दी कि आश्रम की जमीन के एक हकीकी से दो कैनाल जमीन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने खरीद ली है। इस जमीन का बंटवारा होने पर यहाँ पर शहीदी पार्क बनाया जाएगा ताकि दिवंगत आत्माओं को शांति मिल सके। उन्होंने ग्रामीणों से कोई भी गतिविधि न करने को कहा। आचार्य जी ने कहा कि करौंथा की घटना में शहीद हुए आचार्य उदवीर शास्त्री, संदीप कुण्डू, प्रोमिला व सोनू की प्रतिमा लगाई जाएगी। मृतकों के परिवार को योग्यतानुसार नौकरी और 20 लाख रुपए की राशि दिए जाने का आश्वासन प्रशासन ने दिया है।

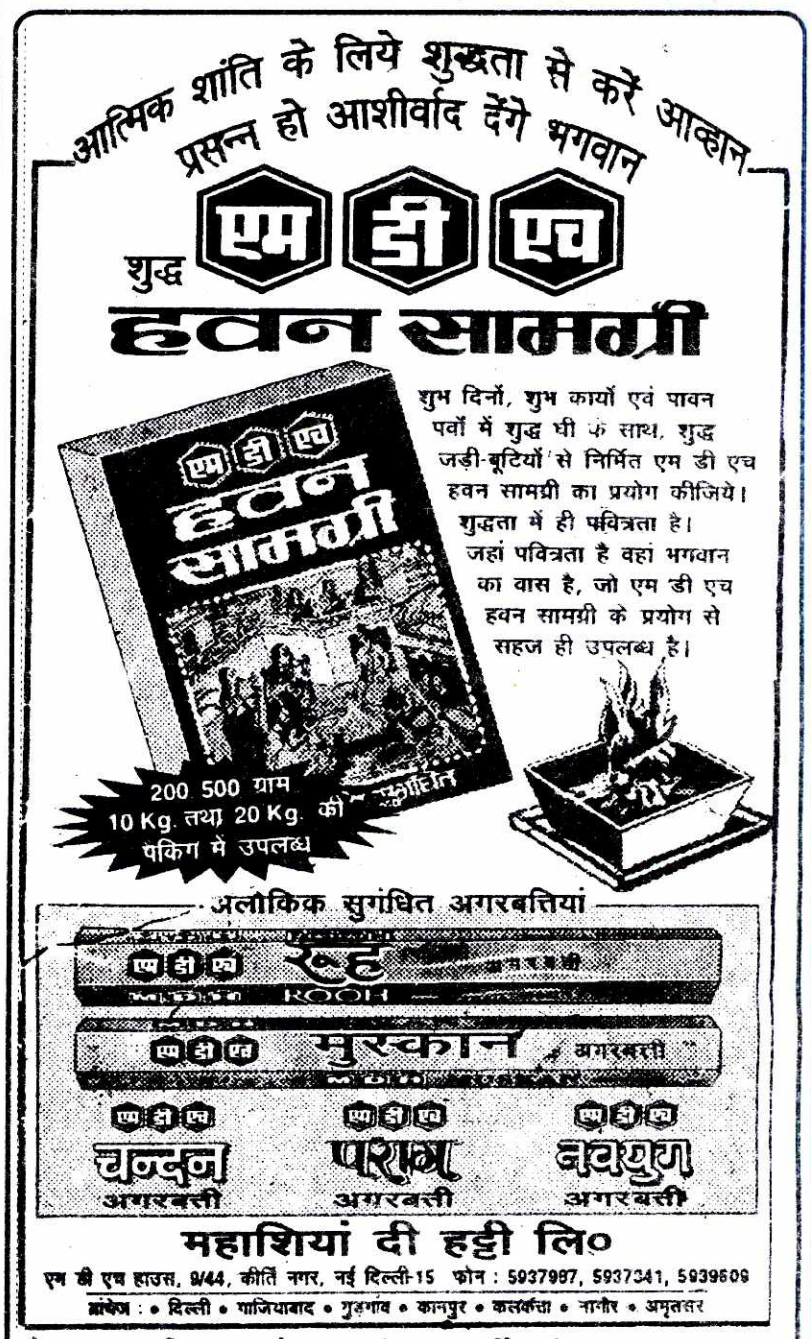

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	25 से 26 मई 2013
2.	आर्यसमाज गाहड़ा जिला महेन्द्रगढ़	1 से 2 जून 2013
3.	आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी	1 से 2 जून 2013
4.	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ़	8 से 9 जून 2013
5.	36वाँ युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर	10 से 16 जून 2013

डी.ए.वी. स्कूल, निकट श्रद्धानन्द पार्क, न्यू कालोनी पलवल

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य-संसार

आश्रम का भव्य वार्षिक उत्सव सम्पन्न

वैदिक योगाश्रम आर्यसमाज न्यू पालम विहार गुड़गाँव का भव्य कार्यक्रम 27-28 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। प्रात:काल सपत्नीक यजमानों द्वारा श्री सूरतसिंह दौलताबाद द्वारा नवनिर्मित यज्ञशाला में यज्ञ सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, आचार्य आर्यनरेश, आचार्य वेदमित्र, आचार्य याज्ञिक, श्री अजय सहगल, श्री रामनाथ सहगल, श्री अनिल आर्य, श्री जगवीर, श्री गंगाशरण के उद्बोधन हुए। श्री गंगाशरण जी द्वारा भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। आचार्य वेदमित्र जी भाऊ आर्यपुर रोहतक के शिष्य आनन्द को जूडो में भारत में चैम्पियन बनने पर 11000/- रु० से सम्मानित किया गया। ऋषिलंगर भी श्री सूरतसिंह जी द्वारा दिया गया। आश्रम का भव्य हाल तथा कक्ष आदि का निर्माण अल्पकाल में हुआ जिसका श्रेय श्री राजेश बल्हारा, डॉ० तोमर, श्री साहनी, श्री अमरदीप, श्री सहदेव तथा आर्यसमाज के पदाधिकारी व दानी महानुभावों को जाता है। कालोनी में अनेक घरों में आचार्य जी द्वारा दैनिक यज्ञ चालू हो गये हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज,
न्यू पालम विहार, गुड़गाँव

निर्वाचन

1. आर्यसमाज मन्दिर, 16-डी दयानन्दमार्ग (वकील रोड) नईमण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

संरक्षक-श्री राजपाल सिंह चाहल एडवोकेट, प्रधान-श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, उपप्रधान-श्री जगदीश आचार्य एडवोकेट, श्री देवीसिंह आर्य, मन्त्री-श्री आर.पी. शर्मा, उपमंत्री-श्री देवीसिंह सिम्भालका, श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री गुलवीरसिंह आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री राकेश कुमार आर्य, उपपुस्तकालयाध्यक्ष-श्री आनन्द स्वरूप आर्य, अधिष्ठाता आर्य वीर दल-श्री अशोक बालियान एडवोकेट (माजरा), प्रचारमन्त्री-श्री सुरेन्द्रपाल सिंह आर्य, संगठन मंत्री-श्री डॉ. नरेश कुमार आर्य, भण्डार अध्यक्ष-श्री मंगतसिंह आर्य, लेखा परीक्षक-श्री जितेन्द्र कुमार मलिक। **—आर.पी. शर्मा, मन्त्री**

2. आर्यसमाज मन्दिर बी-2, जनकपुरी नई दिल्ली-58

प्रधान-श्री कृष्ण बवेजा, मंत्री-मुनी श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी, कोषाध्यक्ष-श्री यशपाल आर्य। **—मुनी जगदीश चन्द्र गुलाटी, मंत्री**

जीवन का लक्ष्य. ... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

स्मृति में जो लोभ सागर में बहना है।

(4) द्वेष—जिस अर्थ का पूर्व अनुभव किया गया हो, उस पर और उसके साधनों पर सदा क्रोध बुद्धि होना।

(5) अभिनिवेश—जो सब प्राणियों को नित्य आशा होती है कि हम सदा शरीर के साथ बने रहें अर्थात् कभी मरें नहीं।

जब उक्त अविद्या आदि क्लेश दूर होके विद्यादि शुभ गुण प्राप्त होते हैं, तब जीव सब बन्धनों, दु:खों से छूट के मुक्ति (मोक्ष) को प्राप्त हो जाता है। अविद्यादि के नाश के बिना मोक्ष कभी किसी को भी प्राप्त नहीं होता।

दु:ख से बचने के लिए मोक्ष प्राप्ति के महर्षि दयानन्द जी द्वारा बताए गये उपायों का अनुसरण करो और जो अपने को योगगुरु कहते हैं, उनसे बचो, आसन सिखाने वाले भी अपने को योगाचार्य कहते हैं, आसन मोक्ष के आठ अंगों की तीसरी संख्या में आता है जिसका अर्थ है शरीर को व्यायाम, आसन आदि से नीरोग रखे जिससे ईश्वर के ध्यान में आसन लगाकर बैठने में कोई कष्ट का अनुभव न हो। सुखपूर्वक ध्यान, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगा रहे। महर्षि दयानन्द ने कभी अपने को योगेश्वर या योगगुरु नहीं कहा जो कई-कई घण्टों तक समाधिस्थ रहा करते थे। पाखण्डी गुरुओं से बचो, महर्षि के ग्रन्थों का स्वाध्याय करो यदि पाखण्डियों से बचना है और मोक्ष-प्राप्ति के मार्ग पर चलना है।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार दिवंगत

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के 1936 के यशस्वी स्नातक, 40 वर्षों तक गुरुकुल विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों पर कार्यरत, वेदों के मर्मज्ञ विद्वान्, सामवेद भाष्यकार, संस्कृत के उद्भट विद्वान् के रूप में राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित, वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार का 99 वर्ष की आयु में 8 अप्रैल 2013 को मध्याह्न लगभग 12 बजे उनके निवास स्थान वेद मन्दिर, ज्वालापुर में अकस्मात् निधन हो गया।

9 अप्रैल को प्रात: वेदमंदिर में श्रद्धांजलि हेतु उनका शव एक मंच पर रखा गया, जहाँ परिवारजनों के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों से आये आर्यजनों, शिक्षकों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों एवं नागरिकों ने पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् उसे पुष्पों से सुसज्जित ट्राली में रखकर गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारियों के बैंड बाजे के साथ एक भव्य शोभायात्रा के रूप में वेद मन्दिर से आर्य वानप्रस्थ आश्रम होते हुए गुरुकुल विश्वविद्यालय-प्रांगण में ले जाया गया, जहाँ गुरुकुल के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार एवं अन्य अधिकारियों ने विश्वविद्यालय के साथ-साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किये। शोभा यात्रा का नेतृत्व वेद मन्दिर के संचालक एवं विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द, वरिष्ठ आर्य नेता स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, विधायक संजय गुप्ता एवं आदेश चौहान, कुलपति प्रो० स्वतंत्र कुमार, उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० महावीर अग्रवाल आदि कर रहे थे।

वेद मन्दिर से कनखल तक के सम्पूर्ण मार्ग पर स्थान-स्थान पर विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं नागरिकों ने अपने प्रिय आचार्य को पुष्पांजलि अर्पित की। शव दाह स्थल पर पतञ्जलि दिव्य योग विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बालकृष्ण ने अपनी तथा स्वामी रामदेव जी की ओर से पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी तथा गुरुकुल के एन.सी.सी. के कैडेट्स ने अंतिम सलामी दी। मुखाग्नि आचार्यश्री के पुत्र डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार तथा पौत्र श्री स्वस्ति अग्रवाल ने दी। महर्षि दयानन्द कृत संस्कारविधि के अनुसार संस्कार हेतु मंत्रपाठ आर्य कन्या गुरुकुल चोटीपुरा एवं नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों तथा गुरुकुल पौंधा (देहरादून) के ब्रह्मचारियों द्वारा अपने-अपने आचार्यों के मार्गदर्शन में किया गया।

10 अप्रैल को मध्याह्नोत्तर 3 बजे वेद मन्दिर में यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्थानों से आये परिवारीजन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारी व शिक्षकगण, विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधिगण एवं संभ्रान्त नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभा में गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा, कुरुक्षेत्र से पधारे स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, विधायक श्री संजय गुप्ता, दिल्ली के आईजी इंटेलीजेंस डॉ. आनन्द कुमार आर्य, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, डॉ० जयदेव वेदालंकार, विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द, डॉ. राजेन्द्र आयुर्वेदालंकार, डॉ. संगीता विद्यालंकार, डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा का संचालन डॉ. महावीर अग्रवाल ने किया तथा डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार ने सभी आगन्तुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सभा में प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री तथा डॉ. महावीर अग्रवाल ने यह घोषणा की कि आगामी 7 जुलाई को आचार्य जी के 100वें जन्मदिवस पर एक भव्य वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा तथा उसकी रूपरेखा तैयार कर शीघ्र ही प्रसारित की जायेगी। कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने यह उद्गार व्यक्त किए कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा भी आचार्य जी की स्मृति को चिरस्थायी रखने के प्रयास किये जायेंगे।

—डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार

कृपया ध्यान दें

उन सभी ग्राहकों से निवेदन है जिनका पत्रिका का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपना वार्षिक शुल्क 150/- मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा '**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक** के नाम से शीघ्र भेजें तथा जिन ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल रही है, वे कृपया अपनी ग्राहक संख्या, अपना पूरा पता, पिनकोड और मोबाइल नं० साफ-साफ लिखकर भेजें जिससे उन्हें समय पर पत्रिका पहुंच सके।

—सम्पादक

विवेक, वैराग्य और अभ्यास द्वारा पाप-वासनाओं पर नियन्त्रण

❑ रमेश चन्द्र पहूजा, 541-एल, माडल टाउन, यमुनानगर-135001

गतांक से आगे....

ऋषि-मुनि जन और विद्वान् लोग वैराग्य की परिभाषा इस प्रकार से करते हैं—

उचित को उचित जानकर, मान कर पकड़ लेना और पकड़े रखना व अनुचित को अनुचित मानकर त्याग देना और त्यागे रखना ही वैराग्य है।

महर्षि पतञ्जलि वैराग्य की परिभाषा इस प्रकार से करते हैं—

दृष्टानुश्रविक विषयवितृष्णास्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम्। अर्थात् अपनी आँखों द्वारा जो देखा है, कानों से जो सुना है, नासिका द्वारा जो सूंघा है आदि-आदि, उनमें सर्वदा अभिरुचि, तृष्णा न रखना, इतना ही नहीं, जिन-जिन रूपों को नहीं देखा, रसों को नहीं चखा, शब्दों को नहीं सुना आदि-आदि, उनमें भी तृष्णा, अभिरुचि न रखना वैराग्य कहलाता है। मदारी जैसे बंदर को बांधे रखता है, वैसे ही मन को बांधे रखना वैराग्य कहलाता है। इसे न भोगने की भावना का नाम ही वैराग्य है।

एक वैरागी के लक्षण कुछ इस प्रकार से हैं—

(1) जैसे सांसारिक लोग भौतिक वस्तुओं को पाकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही एक वैराग्यवान व्यक्ति वैराग्य को पाकर आनन्दित होता है।

(2) वैराग्यवान व्यक्ति की पुत्रैषणा वित्तैषणा और लोकैषणा समाप्त हो जाती है **'गुण वैतृष्ण्यम्'** की स्थिति बन जाती है।

(3) वह कभी किसी को मनसा, वाचा, कर्मणा दु:ख नहीं देता।

(4) स्वर्ग की इच्छा यानि अगला जन्म अच्छा मिले, यह भी समाप्त हो जाती है।

(5) प्राकृतिक तत्त्वों को जान, अपनी उपलब्धियों का ढिंढोरा पीटने की इच्छा भी समाप्त हो जाती है।

(6) मन में प्रत्याहार की अवस्था बन जाती है। यह संसार परिवर्तनशील है, इसके सब सम्बन्ध भी परिवर्तन शील हैं। न जाने हम कितनी बार किसी के पुत्र बने, पिता बने। न इस जन्म से पूर्व इस रूप में थे, न हम मृत्यु के बाद इस रूप में होंगे। ये सम्बन्ध केवल व्यावहारिक हैं। इनसे कभी स्थायी सुख नहीं मिल सकता। प्रत्येक सांसारिक सुख, दु:ख मिश्रित हैं, क्षणभंगुर हैं। सच्चा स्थायी सुख तो प्रभु के साथ सम्बन्ध जोड़ने में ही है।

विवेक और वैराग्य के उपरान्त मुक्ति मार्ग के लिए तीसरा सोपान है, अभ्यास।

अभ्यास

महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन में अभ्यास की परिभाषा इस सूत्र द्वारा की है—**'स्थितौ यत्नोऽभ्यास:'** अर्थात् स्थिति को बनाये रखने में जो यत्न, प्रयत्न या पुरुषार्थ किया जाता है उसे अभ्यास कहते हैं। किसकी स्थिति को बनाये रखने के लिये पुरुषार्थ किया जाता है? **मन की**। अर्थात् अपने मन को एक ही स्थिति में, एकाग्र स्थिति में बनाये रखने के लिए जो **'पुरुषार्थ'** किया जाता है उसे **अभ्यास** कहते हैं। **वह पुरुषार्थ क्या है?** वह है अष्टांग योग को अपने जीवन में निरन्तर उतारते ही रहना, शक्ति से उतारना और उत्साह से उतारना, सतत उतारना। इसी का नाम अभ्यास है।

यदि कोई व्यक्ति यम, नियम, आसन.... आदि को जीवन में उतारता नहीं और केवल मन को एकाग्र करने का अभ्यास करे तो भलीभांति नहीं कर पायेगा। इस बात को बहुत ही सूक्ष्मता से पकड़ना है।

महर्षि वेदव्यास ने अभ्यास की विशेषताएँ गिनाई हैं—

वीर्यं उत्साह अत: इसके बिना अभ्यास अपूर्ण ही रह जाता है। बलहीन मनुष्य कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। एक ही सम स्थिति में मन को बनाये रखने से आत्मा को पाप पुण्य स्पर्श नहीं करते। योगिराज श्रीकृष्ण ने भी इसी स्थिति को **'समत्वं योग उच्यते'** (गीता 2.48) कहा है। अर्थात् मन की सम अवस्था ही योग है।

क्या हम आध्यात्मिक अभ्यास कर सकते हैं? यानि क्या हम अपने मन को एकाग्र कर प्रभु में नियुक्त कर सकते हैं? क्यों नहीं? देखिये वरदा वेदमाता इस विषय में यजुर्वेद के माध्यम से हमें प्रेरित कर रही है।

ओ३म् क्रतो स्मर! क्लिवे स्मर! कृतं स्मर!! (यजु० 40.15) अर्थात् हे आत्मन्! तू क्रतु है, कर्मशील है, प्रयत्नशील है। तुम्हारा स्वभाव ही प्रयत्न करना है। अत: अपने प्रयत्न को अपनी सामर्थ्य को जानो और पहचानो। तुम्हें मालूम है कि कितनी बार विवेक को प्राप्त कर, वैराग्यवान बनकर और अभ्यास करके तुमने समाधि लगाई और परमानन्द की प्राप्ति की।

हम प्राय: भूल जाते हैं कि अष्टांग योग का पालन किये बिना मन को एकाग्र स्थिति में बनाये रखना सम्भव नहीं है। हम में और सत्पुरुषों में क्या अन्तर है? हम क्रोध करते हुए भी क्रोध न करने का अभ्यास करना चाहते हैं। जबकि ऋषि-मुनि जन क्रोध न करते हुए, क्रोध न करने का अभ्यास करते हैं। इसी प्रकार काम, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष आदि के बारे में समझ लेना चाहिए।

यदि हमारे किसी भी लौकिक कार्य के कारण किसी दूसरे को कष्ट हो रहा है तो यह हिंसा के अन्तर्गत आता है चाहे वह मन, वाणी या कर्म से ही क्यों न हो? ऐसे में हमारा मन एकाग्र हो ही नहीं सकता। इसलिए अपने मन को एकाग्र स्थिति में बनाये रखने के लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि को निरन्तर तपपूर्वक, ब्रह्मचर्य पूर्वक, विद्यापूर्वक शक्ति और उत्साह से उतारते रहना चाहिए। इसी का नाम अभ्यास है जो मानव-निर्माण के लक्ष्य, मुक्ति, मोक्ष, परमानन्द को प्राप्त करने की अन्तिम सीढ़ी है।

जब मनुष्य के जीवन में विवेक, वैराग्य और अभ्यास का संगम हो जाता है तो प्रभु के साथ एक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है पिता का, माँ-बेटे का, एक सखा का....।

ऐसे में वह उस प्रभु का स्मरण करता हुआ, हर समय उसकी व्यापकता से ओतप्रोत रहता है, उसके आनन्द में निमग्न रहता है इसी अवस्था का नाम ईश्वर-साक्षात्कार है, मन में एक और केवल एक ही विचार—

'ओम आनन्दम्, 'ओम आनन्दम्'

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।